अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक / लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	घुमंतू घिसाडी समाज का स्वरूप एवं वास्तव	डॉ.भानुदास आगेडकर	06
2	बंजारा समाज की संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	12
3	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ. बी.एस. बलवंत	15
4	वंचित आंबेडकरवादी साहित्य अब वैश्विक परिदृश्य में	डॉ.गोरख बनसोडे	18
5	'छोरा कोल्हाटी का' में स्त्री शोषण कि भयानकता	महेश भोपळे	21
6	घुमंतू समाज का परिचय तथा महाराष्ट्र के घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ.जी.एस.भोसले	24
7	पारधी समाज : जात पंचायत	प्रा.एम.व्ही.वर्णेकर	27
8	घुमंतू श्रनगर जनजाति के अंतरंग	डॉ. संगिता चित्रकोटी	30
9	बिना चेहरे के लोग में चित्रित घुमंतू जन-जातियो की कथा-व्यथा	डॉ. नितीन घवडे	33
10	घुमंतू जन – जातियों का चित्रण सुषमा मुनींद्र की कहानी 'देवता' के संदर्भ में	कु.अलका घोडके	36
11	आदिवासी पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति : निर्मला पुतुल की कविताएँ	डॉ.कामायनी सुर्वे	39
12	वंचीतो के साहित्य में चित्रित वेदना	सचिन जाधव	44
13	वंचित एवं घुमंतू आदिवासी जनजाति का साहित्य : एक विवेचन	श्री. सूर्यकांत आमलापुरे	47
14	घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ कविता पनिया	51
15	घुमंतू बंजारा जाति का स्वरूप एवं उनकी पहचान	प्रा. नीलम भोसले	53
16	घुमंतू जनजातियाँ अपनी नयी रोशनी की तलाश में	डॉ.सिंदू हालदे	58
17	जातपंचायत में गावपंचायत – घुमक्कड समाज का त्रासदी	डॉ. एच.डी.टोंगारे, सतीशकुमार पडोळकर	60
18	रांगेय राघव के 'कब तक पुकारू' उपन्यास में करनट जाति के शोषण का चित्रण	प्रा.जे.ए. पाटील	63
19	बंजारा समाज की बोली भाषा का स्वरूप	डॉ. अनिता काकडे	68
20	घुमंतू समाज में कोल्हाटी समाज	डॉ. दिलीपकुमार कसबे	72
21	रामनाथ चव्हाण के 'बिन चेहरे के इन्सान' कहानी संग्रह में चित्रित घुमंतू समाज की समस्याएँ	डॉ. एच.व्ही. काटे	76
22	बंजारा एवं पारधी : परिवर्तन के संकेत	डॉ.भारत खिलारे	81
23	भारतीय समाज का सबसे वंचित समाज : किसान	प्रा.मारुफ मुजावर	87
24	घुमंतू चित्रकथी समाज का सांस्कृतिक जीवन	श्रीमती. आर. के मुल्ला	90
25	हिंदी कहानी साहित्य में वंचित समाज का चित्रण	प्रा.पी. आर.रगडे	94
26	बंजारा समाज की गुप्त भाषागत शब्दावली : एक अध्ययन	डॉ.सुभाष राठोड	99
27	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ.संग्राम शिंदे	103
28	वंचित अवाम की बुलंद आवाज : जयभारत –जयभीम	डॉ.सय्यद शौकतअली	107
29	घुमंतू समाज की कलाओं के प्रकार और स्वरूप	श्री.अंकुश शेलार	110
30	घुमंतू समाज का व्यवसायानुसार वर्गीकरण	डॉ.बाजीराव शेलार	114
31	घुमंतू समाज का स्वरूप और उनके व्यवसाय	डॉ. महिपती शिवदास	118

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

हिंदी कहानी साहित्य में वंचित समाज का चित्रण

प्रा. रगडे पी. आर
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
शंकरराव जगताप आर्टस् अॅण्ड कॉमर्स कॉलेज,
वाघोली त. कोरेगाव जि. सतारा
मो. नं. ९८५०४६२६३३ ई मेल ragadepr@gmail.com
संलग्न : शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर (महा)

साहित्य समाज जीवन का दर्पन है। साहित्य उसे कहा जाता है, जिसमें युगबोध के साथ समाज जीवन का यर्थाथ चित्रिन होता हैं। इक्कीसवीं शताब्दी तो अपने-अपमें बहुत महत्वपूर्ण है। संपूण जग को एक परिवार के बनाने का काम इस शताब्दी ने किया है। इक्कीसवीं शताब्दी की बदौलत ही साहित्यकार ऐसे विषयों की चर्चा करने लगा है, जिन के संदर्भ में कभी सोचा न समझा गया था। इक्कीसवीं शताब्दी के कारण ही साहित्य में अनेक विमर्शों की चर्चा हो ने लगी हैं। इक्कीसवीं शताब्दी ने वैश्विक विमर्श में महाआख्यानों के अंत की घोषणा की गई, हजारों वर्षों से साहित्य के केंद्र की महानताएँ अपनी आभा खोने लगी। उनकी जगह लघुताओं की प्रतिष्ठा होने लगी। हाशिये के लोगों के विचार और भावनाओं को जगह मिलने लगी। भारत में बीसवीं सदी के अंतिम दशक में, जब भूमंडलीकाण यथा उदारीकरण,मुक्तबाजार व्यवस्ता और वैयक्तिकरण को स्वीकर किया गया, तो दलितों, अल्पसंख्यांकों, नारियों, आदिवासियों, वृध्दों, पुरूषों, वंचितो,प्रवासियों के हक्क के लिए आवाजे उठने लगी। साहित्य में यह विचार प्रस्तावक के रूप में पहले भी विद्यमान थे,पर आब इनका प्रभाव दिखाई पडने लगा है। दलित विमर्श, नारी विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्याक विमर्श, वंचितों आदि पर बडे जोरों से चर्चाएँ होने लगी हैं। इक्कीसवीं शताब्दी के दौर में हर कोई आपनी जडों को तलाश नें लगा,सामाजिक अस्तित्व को ढूंढने का प्रयास किया जाने लगा। ऐसे समय वंचित एवं हाशिय से दूर 'थर्ड जेंडर' भी भला कैसे पिछे रह सकता है। साहित्यकारों का ध्यान इस समुदाय ने अपनी ओर खींच लिया और थोडी बहुत मात्राओं में इनका चित्रण साहित्य के द्वारा होने लगा है। इक्कीसवीं शताब्दी के संदर्भ में डॉ. रजना राज़दान कहती है कि - "हादसों भरे हालात ही जैसे इक्कीसवी सदी की पहचान हो गई है। आम आदमी पुलिस, पुलिस के डंडों की वजह से होती टूट-फूट और लहुलुहान होंती भीड भाड को देखता है, और भगदड़ मच जानेपर बेतरतीब गिरते-पडते, दौडते-भागते,चिल्लाते हुए लोगों की सुनता है, आत्मीयजन के छूट गए हाथों के साथ ही चहल-पहल भी जगह की रौनक को एकदम खिन्न अवसाद में डूबे जाते देखता है।"[०१]

इक्कीसवीं शताब्दी के कारण परिवेश मे बदलाव आने लगा है, जिस के कारण अनेक समुदायों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होने लगा है। एक ओर लाखों मनुष्यू का समूदाय ,जिसे हम हिजड़,(आज गालिके रूप में समजा जाता है।)या किन्नर (यह एक आदिवासी समूह है।) कहते है,चुपचाप समाज के अनपराधिक दंड को झेलता हुआ, हाशियपर पडा था। भूमंडलीकरण ने जो भौतिकता या कहें धनलिप्सा की आपा-धापि पैदा की उससे भारतीय राजनीति भ्रष्टाचार के दलदल में धँस गई सत्ता तक पहूचे राजनेताओं के प्रति घृणा और नफरत का भाव जगा। प्रतिक्रिया स्वरूप लोगों ने भोपाल और गोरखपूर जैसे महानगरों की पालिकाओं में शबनम मौसी,कमल जान या अन्य किसी किन्नर को अपना किमती वोट देकर चूना। राजनीतिक क्षेत्र में इन धमाकों का असर हुआ ही, इन किन्नरों ने अपनी प्रशासनिक क्षमता,प्रतिभा और संवेदना से लोगें

Scanned with CamScanner